अध्याय - 10
मध्यकालीन भारत

हम पढ़ेंगे

10.1 मध्यकाल से आशय एवं मध्यकालीन इतिहास के स्त्रोत।
10.2 दक्षिण भारत के राज्य।
10.3 उत्तर भारत के राज्य।
10.4 अरब व तुर्क आक्रमण।
10.5 तुर्कों से संघर्ष।
10.6 दिल्ली सल्तनत।
10.7 विजय नगर साम्राज्य व बहमनी साम्राज्य।
10.8 मुगल साम्राज्य।
10.9 भारत में मुगल सत्ता का विरोध।

10.1 मध्यकाल से आशय

इतिहास में मध्यकाल से आशय उस काल से लिया जाता है, जो प्राचीन काल और आधुनिक काल के बीच का समय था। इतिहासकारों ने ईसा की आठवीं शताब्दी को मध्यकाल का आरंभ तथा अठारहवीं शताब्दी को उसका अंत मान लिया है। आठवीं शताब्दी को ही मध्यकाल का आरंभ इसलिए माना जाता है क्योंकि इस समय भारत के सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हो रहे थे और इन परिवर्तनों ने भारत के सामाजिक जीवन के अनेक पक्षों को प्रभावित किया था। जीवन के राजनीतिक और आर्थिक पक्षों पर उनका प्रभाव पड़ा। सामाजिक जीवन, धर्म, भाषा, कला इत्यादि सभी क्षेत्रों को इन परिवर्तनों ने प्रभावित किया। इसलिए आठवीं शताब्दी को मध्यकाल का प्रारंभ माना जाता है। इसी प्रकार मुगल साम्राज्य के पतन और अंग्रेजों के आने के समय अठारहवीं शताब्दी में भी अनेक परिवर्तन हुए। इसी कारण मध्यकाल का अंत अठारहवीं शताब्दी को माना जाता है।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

इस काल का इतिहास जानने के लिए हमारे पास पर्याप्त पुरातात्विक व साहित्यिक स्त्रोत उपलब्ध हैं जो निम्नलिखित हैं–

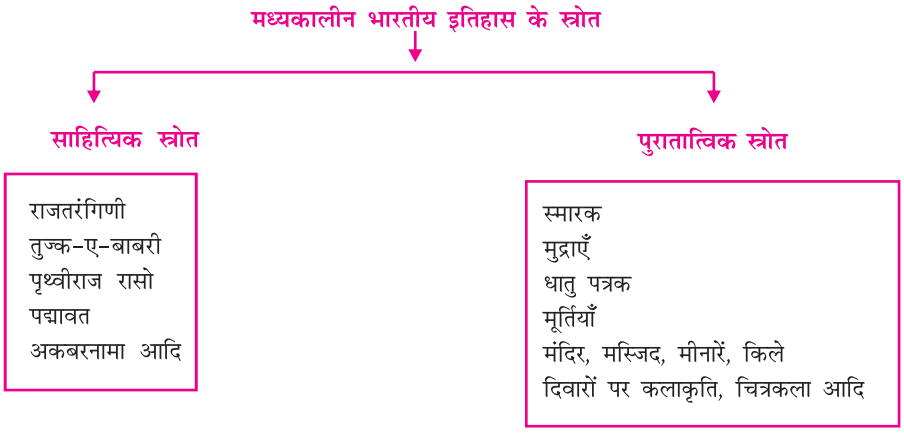

हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात भारत वर्ष में राजनैतिक रिक्तता की स्थिति निर्मित हो गई और विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के कारण सामन्ती शक्तियों ने देश की राजनीतिक एकता को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसी दौरान भारत

में अनेक नवीन राजवंश उत्पन्न हो गए। जैसे उत्तर भारत में गुर्जर प्रतिहार, पालवंश, चालुक्य, परमार, चौहान मुख्य राजवंश थे। दक्षिण भारत में पल्लव, राष्ट्रकूट, कल्याणी के चालुक्य, चेर, पाण्डय, चोल प्रमुख साम्राज्य थे।

मध्यकाल को अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में बांटा गया है। आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक के काल को **पूर्व मध्यकाल** कहते हैं।

10.2 दक्षिण भारत के राज्य

आठवीं शताब्दी में दक्षिण भारत अनेक छोटे-2 राज्यों में बटा था, जिसमें प्रमुख राज्य निम्नलिखित थे –

पल्लव – पल्लवों का उदय कृष्णा नदी के दक्षिण प्रदेश (आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु) में हुआ। पल्लव राजाओं ने लगभग 500 वर्षों तक शासन किया। नरसिंहवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन द्वितीय इस वंश के प्रतापी शासक हुए। कालान्तर में चालुक्य, पाण्डय और राष्ट्रकूटों से पल्लवों के संघर्ष चलते रहे। इस वंश के अंतिम शासक अपराजित वर्मन को चोलों ने हराकर इस राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। पल्लवों का शासन प्रबन्ध सुव्यवस्थित था।

चालुक्य – दक्षिण भारत में छठीं शताब्दी ई. के मध्य से आठवीं शताब्दी ई. के मध्य तक चालुक्य वंश ने शासन किया। इसकी राजधानी कर्नाटक (वातापी) थी, तथा यही से इस वंश का राजनीतिक उत्कर्ष हुआ, इसलिए इन चालुक्यों को बादामी (वातापी) के चालुक्य कहा जाता है। चालुक्य राजाओं ने दक्षिण भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में एकीकृत करने का प्रयास किया। चालुक्य वंश के प्रमुख शासक पुलकेशिन प्रथम, कीर्तिवर्मन, मंगलेश, पुलकेशिन द्वितीय, विक्रमादित्य, तैलप द्वितीय, विक्रमादित्य पंचम, जयसिंह द्वितीय, सोमेश्वर प्रथम, विष्णुवर्धन हुए। चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने उत्तर भारत के चेरों को और पल्लवों को हराया तथा अपना राज्य विस्तार किया।

चालुक्य प्रशासन की विशेषताएँ

- चालुक्यों ने लगभग दो सौ वर्षों तक शासन किया
- राजतन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित थी। सम्राट प्रशासन तंत्र का केन्द्र बिन्दु होता था।
- अपने जीते हुए प्रदेशों पर सामन्तों को शासन करने का अधिकार प्रदान किया।
- ग्राम, शासन की सबसे छोटी इकाई

चोल साम्राज्य – दक्षिण भारत का प्राचीनतम शक्तिशाली राजवंश चोल था। प्राचीन चोल शासकों का वर्णन संगम साहित्य में किया गया है। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा करिकाल था। इसके समय चोल साम्राज्य सर्वोच्च ऊँचाई तक पहुँच गया था। इस वंश के अन्य प्रतापी राजाओं में राजा राजराज भी प्रसिद्ध है जिसने लगभग 985 से 1014 ई. तक शासन किया। राजा राजराज के राज्य में तुगंभद्रा नदी तक का सम्पूर्ण दक्षिण भारत मालद्वीप व श्रीलंका का कुछ भाग उसके साम्राज्य में शामिल था। राजेन्द्र तृतीय (1279 ई.) इस वंश का अंतिम शासक था। चोल राजवंश अपने प्रशासनिक सुधार कार्यों के लिए इतिहास में जाना जाता है। इस काल में सामुद्रिक शक्ति बहुत उन्नत थी एवं सामुद्रिक जल बेड़ा भी उपलब्ध था।

चोल प्रशासन की विशेषताएँ

- राजा राज्य की सर्वोच्च शक्ति था।
- मंत्री परिषद की सहायता से शासन।
- साम्राज्य मन्डलम् (प्रान्त) में विभक्त था, मन्डलम् वलनाडुओं (जिलों) में विभक्त थे।

- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी व महत्वपूर्ण इकाई ग्राम सभा तीन भागों में अर्थात उर (आम लोगों की सभा) सभा (विद्वान, बाह्मण) नगरम् –(व्यापारी, दुकानदार, शिल्पी) में विभक्त थी।
- ग्राम की प्रशासनिक व्यवस्था के लिये अनेक समितियाँ गठित थी।
- कृषि तथा व्यापार उन्नत था।
- राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भूमि तथा व्यापार कर थे।
- व्यापार तथा संचार सुविधा विकसित थी तथा विदेशों से व्यापार किया जाता था।

राष्ट्रकूट – राष्ट्रकूट दक्षिण भारत में अपनी शक्ति व साम्राज्य विस्तार के लिये जाने जाते हैं। इस वंश के प्रारंभिक नरेश का नाम नन्नराज (लगभग 630 से 650 ई.) था। इस वंश के द्वितीय शासक दंतीदुर्ग (650 से 665 ई.) ने साम्राज्य विस्तार के लिए अनेक कार्य किए।

कृष्ण प्रथम, गोविन्द द्वितीय, राजा ध्रुव, धारावर्ष गोविन्द तृतीय, अमोघवर्ष व कृष्ण द्वितीय इस वंश के प्रमुख शासक थे। इनकी राजधानी मान्यखेट थी। कन्नौज तथा उत्तर भारत पर अधिकार करने के लिये राष्ट्रकूटों को गुर्जर प्रतिहार व पाल वंश से सतत् संघर्ष करना पड़ा। जिससे इनकी शक्ति कमजोर हो गई। लगभग 973 ई. में चालुक्य शासक तैलप द्वितीय ने अंतिम राष्ट्रकूट शासक कर्क द्वितीय को परास्त कर उसके राज्यों पर अपना अधिकार कर लिया।

चेर राज्य – अशोक के शिलालेखों के अनुसार चेर वंश की स्थापना प्राचीन काल में हुई थी। इनके राज्य में मलाबार, त्रावणकोर और कोचीन सम्मिलित थे। चेर राज्य के बन्दरगाह व्यापार के बड़े केन्द्र थे। चोल वंश से चेर वंश के वैवाहिक संबंध थे। ये अधिक समय तक शासन नहीं कर सके। आठवीं शताब्दी में पल्लवों ने, दसवीं शताब्दी में चोलों ने तथा तेरहवीं शताब्दी में पाण्ड्यों ने चेर राज्य पर अधिकार किया।

पाण्डय राज्य – पाण्डय राज्य प्राचीन तमिल राज्यों में एक प्रमुख राज्य था। जिनकी राजधानी मदुरै थी। पाण्ड्य राजाओं में अतिकेशरी माखर्मन प्रसिद्ध शासक रहा।

10.3 उत्तर भारत के राज्य

आठवीं शताब्दी में उत्तरी भारत के प्रमुख राजवंश निम्नलिखित थे।

गुर्जर प्रतिहार – गुर्जर प्रतिहार राजवंश ने आठवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी तक शासन किया। इन्होंने भारत के बड़े भूभाग पर लम्बे समय तक शासन ही नहीं किया बल्कि सिन्ध क्षेत्र से बढ़ते हुए मुस्लिम आक्रमणकारियों को उत्तरी भारत में बढ़ने नही दिया। इस वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम था। इस वंश के राजाओं ने मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान के कुछ भागों पर लम्बे समय तक शासन किया। नागभट्ट प्रथम, वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, मिहिर भोज, महेन्द्र पाल आदि इस वंश के प्रमुख शासक थे। प्रतिहारों का पालों तथा दक्षिण के राष्ट्रकूटों के मध्य कन्नौज पर अधिकार करने के लिये लगभग 200 वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। इसे त्रिराज्य संघर्ष कहा जाता है।

पाल वंश – बंगाल के पालवंश के शासकों ने आठवीं शताब्दी के मध्य में उत्तर भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। इस वंश का संस्थापक गोपाल था। कन्नौज पर अधिकार को लेकर पाल शासकों का प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों से संघर्ष होता रहा। इस वंश के प्रमुख शासक धर्मपाल व देवपाल थे। प्रसिद्ध विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना धर्मपाल ने की थी। यह बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। पाल शासक शिक्षा और धर्म के संरक्षक थे।

चालुक्य वंश (सोलंकी) – गुजरात के सोलंकी वंश का संस्थापक मूलराज था। इस वंश के शासक भीम प्रथम के समय महमूद गजनवी ने गुजरात पर आक्रमण किया था, जिसमें भीम प्रथम पराजित हुआ था। भीमदेव

की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कर्णदेव सन् 1064 में गद्दी पर बैठा। सोलंकी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक जयसिंह सिद्धराज माना जाता है। सिद्धराज के पश्चात् कुमारपाल शासक बना। जैनाचार्य हेमचंद्राचार्य कुमारपाल के मार्गदर्शक थे। कुमारपाल के बाद भीमदेव द्वितीय गद्दी पर बैठा। इसी के समय में मुहम्मद गौरी का आक्रमण हुआ।

प्रसिद्ध भोजपुर मंदिर एवं भोपाल का बड़ा तालाब राजा भोज के काल के बने है।

परमार वंश – परमार वंश का संस्थापक उपेन्द्रराज था। इस वंश के प्रमुख शासक सीयक द्वितीय, मुंज, सिंधुराज, भोजदेव, जयसिंह और उदयादित्य थे। सीयक ने राष्ट्रकूटों को पराजित कर मालवा में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। राजा भोज इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक था। वह महान विजेता उच्चकोटि का लेखक, कवि विद्यानुरागी और विद्वान था। उसकी राजसभा में अनेक विद्वान और कवि आश्रय पाते थे। उसने अनेक मंदिर, राजप्रसाद, तालाब निर्मित कराए। उसके समय में धारा नगरी (वर्तमान म० प्र० का धार जिला) साहित्य और संस्कृति का संगम केन्द्र थी। इस राजवंश ने मध्यप्रदेश सहित गुजरात व राजस्थान में राज्य किया। इतिहास में यह राजवंश अपने मंदिर निर्माण के लिए प्रमुखता से जाना जाता है। इस शासन काल में अनेक उच्च कोटि के मंदिर बनवाए गये।

चाहमान (चौहान) वंश – इस वंश का राज्य जोधपुर और जयपुर के मध्यवर्ती सांभर प्रदेश तक विस्तृत था। आगे चलकर यह वंश चौहान वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक विग्रहराज द्वितीय था। इसी वंश के अजयराज ने अजयमेरू (अजमेर) नगर की नींव डाली। यहां उसने भव्य राजप्रसाद तथा भवनों का निर्माण किया। चौहान वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली और अन्तिम शासक पृथ्वीराज चौहान था।

चंदेल वंश – बुन्देलखण्ड में चंदेल शासकों का प्रभुत्व था। इस राज्य की राजधानी खजुराहों थी। इस वंश के प्रमुख शासक नन्नुक, यशोवर्मन, धंग, विद्याधर, कीर्तिवर्मन, परमार्दिदेव थे। चन्देल राजाओं का शासनकाल उन्नति की दृष्टि से सुविख्यात है। खजुराहो के विश्व प्रसिद्ध मंदिर इसी राजवंश के शासकों द्वारा बनवाए गये हैं।

तेरहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक का काल **उत्तर मध्यकाल** के रूप में जाना जाता है। इस काल में भारत में एक के बाद एक विदेशी आक्रमणकारियों ने अपनी विध्वंसक गतिविधियों को जारी रखा जिसका समय-समय पर भारतीयों ने कड़ा प्रतिरोध किया। कठिन संघर्ष के बाद आक्रमणकारी भारत में अपना शासन स्थापित कर सके।

10.4 अरब एवं तुर्क आक्रमण

राजपूत काल में अनेक बार विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किये। प्रारम्भ में अरबों ने आक्रमण किये, किन्तु वे विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सके। मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर आक्रमण किया, जहाँ पर सिन्ध के राजा दाहिर व उसके बाद उसकी रानी ने वीरता व शौर्य के साथ संघर्ष किया, परन्तु वे पराजित हुए। बिन कासिम की मृत्यु के पश्चात जुनैद ने राजस्थान व गुजरात के कुछ भूभाग पर आक्रमण किया, किन्तु उत्तर भारत के शक्तिशाली राजाओं ने उसे भारत में प्रवेश करने से रोका। चालुक्य शासक पुलकेशी राज, प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय, ललितादित्यमुक्तपीड़ व यशोवर्मा ने अरबों को परास्त किया। अरबों की असफलता का प्रमुख कारण भारतीय राजाओं का अत्यधिक शक्तिशाली होना था।

भारत में **तुर्क आक्रमण** लगभग 974 ई. – 977 ई के मध्य होने प्रारंभ हो गये थे। इनमें मोहम्मद गजनवी व मोहम्मद गौरी द्वारा किये गये आक्रमण प्रमुख रहे।

महमूद गजनवी का आक्रमण – महमूद पश्चिमी एशिया की छोटी सी रियासत गजनी का महत्वाकांक्षी शासक था। उसे अपनी सेना के लिये धन की आवश्यकता थी। उसने भारत की धन सम्पदा के बारे में गाथाऐं सुन रखी थी। अतः धन प्राप्त करने के उद्देश्य से लगभग 1000 ई. से 1027 ई. तक उत्तर भारत के अनेक भागों पर आक्रमण किया। महमूद ने भारत पर कुल 17 बार आक्रमण किये, जिसमें उसे सफलता मिली। पंजाब,

मुल्तान, भटिण्डा, नगरकोट, नारायणपुर, कश्मीर, थानेश्वर, मथुरा, कन्नौज, कालिन्जर, सोमनाथ मुख्य आक्रमण के केन्द्र थे। दिए गए मानचित्र में उक्त स्थानों को देखिए। गजनवी ने अनेक धार्मिक स्थलों को नष्ट किया एवं अपार धन सम्पत्ति लूट कर गजनी ले गया। इस काल के प्रसिद्ध विद्वान अलबरूनी ने जो कि महमूद गजनवी के साथ भारत आया था, गजनवी की विनाश लीला के सम्बन्ध में लिखा है महमूद ने देश की समृद्धि को बर्बादी में बदल डाला। उसके आक्रमण से देश को सांस्कृतिक व आर्थिक हानि हुई। समकालीन हिन्दु राजाओं ने महमूद गजनवी का सामना किया किन्तु राजनीतिक एकता के अभाव में वह असफल रहे। लगभग 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गयी।

मोहम्मद गौरी का आक्रमण – महमूद गजनवी के आक्रमण के लगभग 150 वर्षों पश्चात अफगानिस्तान

की एक छोटी सी रियासत गौर के शासक मोहम्मद गौरी ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया। भारतीय राजाओं के आपसी संघर्ष का लाभ उठाते हुए गौरी ने लगभग 1175 ई. में भारत पर पहला आक्रमण कर मुल्तान तथा सिन्ध पर अधिकार कर लिया। मोहम्मद गौरी का भारत आक्रमण का उद्देश्य धन प्राप्ति व इस्लाम का प्रचार करना था। इस समय उत्तर भारत में हिन्दू राज्यों में अजमेर और दिल्ली का चौहान राज्य, गुजरात में सोलंकी राज्य, कन्नौज में गहड़वाल राज्य, बंगाल, बिहार में सेन राज्य, बुन्देलखण्ड में चन्देल राज्य थे। दक्षिण भारत में देवगिरी, वारंगल तथा होयसल प्रमुख राज्य थे।

10.5 तुर्कों से संघर्ष

पृथ्वीराज चौहान का तुर्कों से संघर्ष

मोहम्मद गौरी ने लगभग 1178 ई. में गुजरात पर आक्रमण किया जहाँ भीमदेव द्वितीय का शासन था। भीमदेव की सेना ने मोहम्मद गौरी को पराजय दी। गौरी को जान बचाकर भागना पड़ा। उसने दुबारा गुजरात पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया। पंजाब मुल्तान और सिन्ध पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उसने उत्तर भारत के प्रमुख सम्राट पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण करने के उद्देश्य से पंजाब की सीमा पर भटिण्डा नामक दुर्ग पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया।

पृथ्वीराज चौहान

पृथ्वीराज चौहान दिल्ली और अजमेर का योग्य, वीर, प्रतिभावान शक्तिशाली सम्राट था। उसके पास उत्तम सेना व सेनापति थे। पृथ्वीराज ने तराइन के मैदान में 1191 ई. में गौरी का सामना किया, यह तराइन का प्रथम युद्ध कहलाता है। पृथ्वीराज की सेना के भीषण आक्रमण के समक्ष गौरी के सैनिक टिक न सके और वे भागने को विवश हुए। गौरी भी घायल अवस्था में युद्ध से भागा। पृथ्वीराज ने भागती हुई तुर्क सेना का राजपूती आन के कारण पीछा न किया, फलस्वरूप गौरी भागने में सफल हुआ। गौरी अपनी अपमानजनक पराजय को भूल न सका और उसने पुनः तैयारी के साथ तराइन के मैदान में 1192 ई. में दुबारा युद्ध किया, जो तराइन का द्वितीय युद्ध कहलाता है। पृथ्वीराज ने वीरता से युद्ध किया तथा गौरी को पीछे हटने पर विवश किया किन्तु गौरी ने कूटनीति चालों से पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना लिया। इस प्रकार दिल्ली व अजमेर पर मोहम्मद गौरी का अधिकार हो गया। अनेक राजपूत राजाओं ने पृथ्वीराज का साथ दिया लेकिन कन्नौज के राजा जयचन्द ने अपनी व्यक्तिगत शत्रुता के कारण पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया।

10.6 दिल्ली सल्तनत

दास वंश : दिल्ली सल्तनत में प्रथम वंश दास वंश था जिसकी स्थापना का श्रेय मुहम्मद गौरी के दास **कुतुबुद्दीन ऐबक** को दिया जाता है। 1206 ई. में मोहम्मद गौरी की मृत्यु हई। उसने भारतीय प्रदेशों की व्यवस्था का भार अपने दास और सिपहसालार कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंपा। गौरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली और उसके अधीन प्रदेशों का स्वयं शासक बन गया। उसने 1206 ई. से 1210 ई. तक शासन किया। उसने अपने स्वामी मुहम्मद गौरी के लिए अनेक युद्ध जीते थे। उसने हांसी, अजमेर, मेरठ, अलीगढ़ और रणथम्भौर पर विजय प्राप्त की। दिल्ली स्थित कुतुबमीनार को बनवाने का श्रेय उसी को दिया जाता है। 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से उसकी मृत्यु हो गई।

कुतुबुद्दीन की मृत्यु के बाद आरामशाह को दिल्ली का सुल्तान घोषित किया गया मगर वह कुछ ही माह राज्य कर सका।

इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

दास वंश के शासकों में सबसे योग्य शासक इल्तुतमिश हुआ। वह इल्बारी तुर्क था। खोखरों के विरुद्ध युद्ध में अपार साहस दिखाने के कारण और मुहम्मद गौरी के कहने पर कुतुबुद्दीन ने उसको दासता से मुक्त कर दिया था। इल्तुतमिश 1211 ई में आरामशाह को हटाकर दिल्ली का सुल्तान बना।

इल्तुमिश ने अरबी ढंग का नया सिक्का टंक एवं तांबे का जीतल नामक सिक्का चलाया। टंक चांदी और सोने की धातुओं का होता था।

गद्दी पर बैठने के बाद, इल्तुतमिश के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी। मंगोलों एवं बाहरी आक्रमणकारियों के कारण पश्चिमोत्तर सीमाएं सुरक्षित नहीं थीं। गजनी का यल्दौज तथा सिंध एवं मुल्तान का कुबाचा व सल्तनत के सूबेदार व सरदार उसके विरोधी थे। उसने विद्रोही सरदारों और सूबेदारों की शक्ति को समाप्त कर तुर्को का एक संगठन तैयार किया। अपनी दूरदर्शिता तथा कूटनीति द्वारा मंगोल नेता चंगेज खां के आक्रमण से दिल्ली को बचा लिया था। राजपूतों की बढ़ती हुई शक्ति को सीमित करने के लिए रणथम्भौर, मंदौर, नागोद, सांभर, नयाना, जालौर एवं ग्वालियर पर आक्रमण किए। 1232 ई. में ग्वालियर के दुर्ग को जीत लिया। सुल्तान ने 1234 ई. में मालवा के राज्य भेलसा एवं उज्जैन पर आक्रमण कर उसे जीता। 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।

रजिया सुल्तान (1236 ई. से 1240 ई. तक)

इल्तुतमिश के पुत्र अयोग्य थे इस कारण उसने अपनी योग्य पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी बनाया। रजिया दरबार में बैठती एवं युद्धों का नेतृत्व करती थी। पुत्रों के होते हुए भी पुत्री को सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाना मध्यकालीन इतिहास में एक नया कदम था। पूरे मध्यकाल के इतिहास में रजिया दिल्ली की प्रथम मुस्लिम महिला सुल्तान थी।

रजिया सुल्तान

अमीर तुर्की सरदार महिला सुल्तान को बर्दाश्त नहीं कर सके और उसके विरूद्ध षडयंत्र और विद्रोह करने लगे जिसमें सबसे सशक्त विद्रोह भटिण्डा के अलतूनिया का था जिसे दबाने के लिए रजिया ने लाहौर पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में उसका सेनापति याकूत मारा गया एवं रजिया की हत्या कर दी गयी।

रजिया के बाद बहरामशाह, अलाउद्दीन मसूद शाह, तथा नासिरुद्दीन महमूद नाममात्र के दिल्ली के सुल्तान बने जबकि वास्तविक सत्ता अमीर सरदारों के हाथ में रही।

गयासुद्दीन बलबन (1266 - 1286 ई.) - बलबन को सुल्तान इल्तुतमिश ने खरीदा था। बलबन ने अपनी योग्यता और सेवाओं से अपने स्वामी को प्रभावित किया था तथा शीघ्र ही **चालीस अमीरों के दल** का सदस्य बना दिया गया। बलबन ने अपने स्वामी इल्तुतमिश और उसके उत्तराधिकारी की पूर्ण भक्ति के साथ सेवा की। 1266 ई में नासिरुद्दीन महमूद के बाद वह गद्दी पर बैठा।

बलबन ने शासन संचालन के लिए 'लौह और रक्त' की नीति का अनुसरण किया। अपने विरोधियों को समाप्त करने में उसे तनिक भी संकोच नहीं होता था। उसने निरंकुश राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था का गठन किया। वह सुल्तान के दैवी अधिकारों में विश्वास करता था, वह सुल्तान के पद को श्रेष्ठ और गौरवमय मानता था। उसकी आज्ञाओं और आदेशों का पूर्ण रूप से पालन न करने वालों को वह कठोर दण्ड देता था। उसने राज्य की सुरक्षा

के लिए सेना का पुनर्गठन किया तथा एक शक्तिशाली गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की।

खिलजी वंश

खिलजी वंश की स्थापना सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने 1290 ई. में की थी। वह सुल्तान बनने से पूर्व दिल्ली की सेनाओं के सेनापतियों में प्रमुख स्थान रखता था। उसने बलबन के उत्तराधिकारी कैकुबाद की हत्या कर दी और स्वयं सुल्तान बन गया। सुल्तान बनने के बाद उसने अपने वफादार साथियों में उदारता के साथ पद और पुरस्कारों का वितरण किया। उसने अपने भतीजे अलाउद्दीन से अपनी पुत्री का विवाह कर उसे अपना दामाद बना लिया। उसने अलाउद्दीन को कड़ा और मानिकपुर का सूबेदार नियुक्त किया। मगर जलालुद्दीन खिलजी अयोग्य और दुर्बल शासक सिद्ध हुआ। परिणामस्वरूप राज्य में विद्रोहों को प्रश्रय मिला। 1296 ई में अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दी और स्वयं सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई. 1316 ई. तक) - अलाउद्दीन महत्वाकांक्षी था। उसकी इच्छा सम्पूर्ण भारत का सुल्तान बनने की थी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने उत्तर भारत में सिन्ध, मुल्तान, गुजरात जालौर, जैसलमेर, रणथम्भौर, चित्तौड़, उज्जैन एवं चंदेरी पर आक्रमण किया और उन पर विजय प्राप्त की। दक्षिण भारत के चार राज्यों देवगिरि, वारंगल, द्वार समुद्र और मदुरा पर विजय प्राप्त करने के लिए उसने अपने सेनापति मलिक काफूर को भेजा। उसने एक विशाल सेना तथा गुप्तचर विभाग का गठन किया। उसने विद्रोही सरदारों तथा अमीरों की शक्ति को कुचल दिया। अपनी विशाल सेना को कम मूल्यों पर वस्तुएं उपलब्ध कराने के लिए दिल्ली में **बाजार नियन्त्रण व्यवस्था** लागू की जिसका दिल्ली की जनता को लाभ मिला। अलाउद्दीन ने राशनिंग व्यवस्था भी क्रियान्वित की थी। मौसम के आकस्मिक परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए उसने शासकीय अन्न भंडार बनाए थे। उसने वस्तुओं के मूल्यों की निर्धारण मनमाने ढंग से न कर उत्पादन लागत के अनुसार करवाया था। बरनी ने अपने ग्रंथ 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में बाजार नियंत्रण व्यवस्था का विस्तृत विवरण व वस्तुओं के मूल्य की सूची दी है।

अलाउद्दीन ने किसानों, व्यापारियों एवं हिन्दुओं पर अत्यधिक कर लगा दिए । करों को कठोरता एवं निर्दयता से वसूल किया जाता था।

1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के साथ ही खिलजी वंश का पतन हो गया। इस बीच भारत पर मंगोल आक्रमण का खतरा बना रहा। मंगोलों ने लगभग एक शताब्दी तक भारत में मुस्लिम साम्राज्य के लिए खतरे पैदा किये।

तुगलक वंश

1320 ई. में गयासुद्दीन तुगलक, खिलजी वंश के अन्तिम शासक नासिरूद्दीन खुसरो को हटाकर, दिल्ली का सुल्तान बना। सुल्तान बनने के बाद उसने वारंगल, उड़ीसा और बंगाल के लिए सैनिक अभियान किए।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)- जूना खाँ अर्थात मुहम्मद बिन तुगलक 1325 ई. में अपने पिता गयासुद्दीन को मारकर दिल्ली का सुल्तान बना। वह दिल्ली सल्तनत के इतिहास का सबसे विवादास्पद सुल्तान था। वह प्रतिभावान, सुयोग्य, विचारशील एवं विद्वान सुल्तान माना जाता है। वह अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के कारण इतिहास में जाना जाता है।। दोआब में कर वृद्धि, दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद (देवगिरि) को राजधानी बनाने की योजना, सोने-चांदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्के (सांकेतिक मुद्रा) चलाना, विजयों की कथित योजना बनाना आदि ऐसी योजनाएं थी जिनको कार्य रूप में परिणिति किया गया और फिर वापस भी ले लिया गया। योजनाओं को बनाना, लागू करना और वापस लेना, धन और समय की बर्बादी थी। अपनी इन्हीं योजनाओं के कारण तथा जनता पर अत्याचारों के कारण उसे पागल, पितृहन्ता, रक्त पिपासु, अभिमानी, हठी, अपने युग से आगे, विभिन्नताओं का सम्मिश्रण आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है।

फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई.) - 1351 ई. में मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद उसका

चचेरा भाई फिरोजशाह तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना। गद्दी पर बैठने के बाद फिरोज ने बंगाल, जाजनगर, नगरकोट, थट्टा आदि स्थानों पर सफल आक्रमण किए। मुहम्मद तुगलक के काल में व्याप्त प्रशासनिक शिथिलता को दूर करने के लिए अनेक कदम उठाए।

तैमूर लंग का आक्रमण

समरकंद का शासक तैमूर अत्यधिक साहसी, वीर और महत्वाकांक्षी था। भारत की अपार धन-सम्पत्ति उसे भारत पर आक्रमण करने हेतु प्रेरित कर रही थी साथ ही उसके भारत में आक्रमण का उददेश्य धार्मिक भी था। 1398 ई. में एक विशाल सेना के साथ उसने भारत में प्रवेश किया और शीघ्र ही दिल्ली पर अधिकार कर लिया। भारत पर शासन करने की उसकी इच्छा नहीं थी अत: लूट-पाट भीषण नरसंहार एवं कृषि को अपार नुकसान पहुँचाकर वह वापिस समरकंद चला गया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

तुगलक वंश के पतन के बाद सैय्यद वंश के लोगों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। इस वंश में खिज्र खां, मुबारकशाह, मुहम्मद शाह तथा आलमशाह दिल्ली के सुल्तान बने जिनका इतिहास में विशेष उल्लेखनीय योगदान नहीं है।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

1451 ई. में बहलोल लोदी दिल्ली का सुल्तान बना। उसने अपना अधिकांश समय विद्रोहियों से दिल्ली को सुरक्षित करने में लगा दिया। 1489 ई. में उसका पुत्र सिकन्दर लोदी सुल्तान बना। 1517 ई. में उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र इब्राहिम लोदी दिल्ली का सुल्तान बना। उसको आन्तरिक विद्रोहो का सामना करना पड़ा। उसका मेवाड़ के राणा सांगा तथा ग्वालियर के मानसिंह के साथ युद्ध हुआ। उसका ग्वालियर पर किया गया आक्रमण सफल रहा।

इब्राहिम लोदी के शासन काल में दिल्ली सल्तनत पर काबुल के शासक बाबर का आक्रमण हुआ। 1526 ई. को पानीपत के मैदान में दोनों सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध हुआ। इब्राहिम युद्ध में मारा गया। दिल्ली और आगरा पर बाबर का अधिकार हो गया। बाबर की विजय के साथ ही दिल्ली सल्तनत का विघटन हो गया।

10.7 विजयनगर व बहमनी साम्राज्य

अलाउद्दीन खिलजी के काल में दक्षिण भारत में धर्म एवं संस्कृति पर गहरा आघात हुआ। धीरे-धीरे लोगों ने अपनी आत्मरक्षा, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा के लिए विरोध प्रदर्शित करना शुरु किया। दक्षिण भारत के प्रख्यात सन्त एवं विद्वान माधव विद्यारण्य ने इस कार्य में अत्यधिक योगदान दिया। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के पीछे दक्षिण भारत में हिन्दु पुनर्जागरण की भावना मुख्य रूप से थी। मुहम्मद तुगलक के काल में व्याप्त अराजकता और विद्रोह ने इस आन्दोलन को गति प्रदान की।

विजयनगर की स्थापना का श्रेय हरिहर तथा बुक्का नामक दो भाइयों को दिया जाता है। इनके पिता का नाम संगम था। इसलिए इनका राजवंश **संगम राजवंश** के नाम से भी जाना जाता है। मुहम्मद तुगलक ने वारंगल पर आक्रमण किया और राज्य को जीत लिया। दोनों भाइयों को बन्दी बनाकर दिल्ली भेज दिया गया।

सुल्तान इनकी सेवा तथा योग्यता से प्रभावित हुआ और इन्हें सेना में नौकरी दे दी। दक्षिण भारत में विद्रोहों को दबाने के लिए दोनों भाइयों को भेजा गया। जहाँ वे दक्षिण भारत के प्रसिद्ध सन्त माधव विद्यारण्य के सम्पर्क में आए। यहीं उन्हें हिन्दू संस्कृति की रक्षा करने की प्रेरणा मिली। 1336 ई. में हरिहर ने तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर हंप्पी-हस्तिनावती राज्य की नींव डाली। नगर का नाम विजयनगर रखा गया। जो आगे चलकर एक विशाल साम्राज्य के रूप में सामने आया। दिए गए मानचित्र में विजयनगर राज्य की सीमाओं को देखिए।

हरिहर प्रथम – विजयनगर का प्रथम शासक हरिहर था। अपने भाई बुक्का की सहायता से उसने शासन किया तथा राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। उसने थोड़े समय में ही राज्य को उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर दक्षिण में कावेरी नदी तक और पूर्व एवं पश्चिम में समुद्र तट तक विस्तृत कर दिया, उसने एक सशक्त शासन स्थापित किया।

बुक्का – अपने भाई हरिहर की मृत्यु के बाद वह विजयनगर का शासक बना। बुक्का के काल से बहमनी राज्य के साथ परम्परागत संघर्ष प्रारम्भ हो गया। बुक्का ने मदुरा के मुस्लिम राज्य को जीत कर अपना राज्य सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम तक फैला दिया। उसने हिन्दू संस्कृति की रक्षा के लिए अनेक कार्य किए और वेद-मार्ग-प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की। उसने जैन, बौद्ध, ईसाई तथा इस्लाम के मानने वालों को भी धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की। उसने तेलुगु साहित्य को प्रोत्साहित किया और शासन का केन्द्रीकरण किया। उसने अपना राजदूत चीन भी भेजा था।

हरिहर द्वितीय – हरिहर द्वितीय लगभग 1377 ई. में शासक बना। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। उसने मैसूर, कांजीवरम्, चिंगलपुर, त्रिचनापल्ली आदि नगरों पर विजय प्राप्त की। उसका बहमनी राज्य के साथ युद्ध हुआ। उसने अपना अधिकांश समय शासन को सुसंगठित करने और धार्मिक कार्यों में लगाया। उसने अनेक मन्दिर बनवाए तथा उदारतापूर्वक दान दिए। प्रसिद्ध विद्वान सायण उसके राज्य का प्रधानमंत्री था।

हरिहर द्वितीय की 1406 ई. में मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में राजगद्दी के लिए संघर्ष हुआ। विरूपाक्ष प्रथम, बुक्का द्वितीय तथा देवराय प्रथम शासक हुए। इसके बाद रामचन्द्र तथा वीर विजय राजा बने।

देवराय द्वितीय – देवराय संगम वंश का श्रेष्ठ शासक था। देवराय के शासन काल में बहमनी राज्य के साथ दो बार युद्ध हुए जिसमें विजयनगर को काफी नुकसान उठाना पड़ा। देवराय ने लंका पर आक्रमण किया और कर प्राप्त किया। उसने सामुद्रिक व्यापार को उन्नत किया। साहित्य एवं शैव मत को प्रश्रय दिया।

संगम वंश का अन्त – देवराय द्वितीय के बाद मल्लिकार्जुन (1446–1465 ई.) तथा विरूपाक्ष द्वितीय (1465–1485 ई.) दुर्बल शासक हुए। अन्त में तेलंगाना के चन्द्रगिरि के सामन्त नरसिंह सालुव ने लगभग 1486 ई. में राज्य पर अधिकार कर लिया और विजयनगर में सालुव राजवंश की नींव डाली।

सालुव राजवंश – सालुव राजवंश ने विजयनगर में लगभग 1486 ई. से 1505 ई. तक राज्य किया।

नरसिंह सालुव – (1486–1490 ई.) नरसिंह सालुव वीर, शक्तिशाली और योग्य शासक था। उसने साम्राज्य में हो रहे विद्रोहों को दबाया और बहमनी राज्य द्वारा जीते गए प्रदेशों पर पुनः अधिकार किया। उसने शक्तिशाली सेना के गठन के लिए अरब व्यापारियों से श्रेष्ठ घोड़े क्रय किए। वह साहित्यानुरागी था। उसके काल में प्रसिद्ध ग्रन्थ जेमिनी भारतम् लिखा गया।

नरसिंह सालुव की 1490 ई. में मृत्यु हो गई। उसका पुत्र इमादि नरसिंह शासक बना मगर वह दुर्बल था जिस कारण शासन का भार उसके सेनानायक नरस नायक पर आ गया।

तुलुव राजवंश

वीर नरसिंह (1505–1509 ई.) – अपने पिता नरस नायक की मृत्यु के बाद वीर नरसिंह ने इमादि नरसिंह की हत्या कर दी और विजयनगर में तुलुव राजवंश की नीवं डाली। वीर नरसिंह ने लगभग 1509 ई. तक शासन किया।

कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.) – तुलुव राजवंश का श्रेष्ठतम शासक कृष्णदेव राय था। यह वीर नरसिंह का चचेरा भाई था। वह एक वीर सैनिक, सफल सेनानायक तथा कुशल प्रशासक था। उसने राज्य में शान्ति स्थापित की और आर्थिक विकास की तरफ ध्यान दिया। उसने विद्रोहों को कुचल दिया और पड़ोसी राज्यों को परास्त करके राज्य की सीमाओं को सुरक्षित किया। उसने बहमनी राज्य उड़ीसा, गोलकुण्डा और बीजापुर के विरुद्ध सफल युद्ध किए। राजनीतिक एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से पुर्तगालियों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए। वह विद्या और कला का प्रेमी था। उसके दरबार में श्रेष्ठ कवि तथा कलाकार थे। पुर्तगाली यात्री पेइडा ने उसकी बहुत प्रशंसा की है। कृष्णदेव राय स्वयं तेलुगू और संस्कृत का विद्वान था। उसने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें आमुक्त माल्यदा तथा जांबवती कल्याणम आज भी उपलब्ध हैं। अपने साहित्य प्रेम के कारण वह 'आन्ध्र का भोज' कहलाता है।

उसने साम्राज्य के विभिन्न भागों में सहस्त्र स्तम्भों वाले मण्डपों और गोपुरों का निर्माण कराया। उसने विजय भवन, हजाराराम मन्दिर तथा विट्टल मन्दिर बनवाए। उसने नागलापुर नामक नगर को बसाया।

कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई अच्युत देवराय लगभग 1529 ई. में राजा बना। कृष्णदेव राय के दामाद रामराय को भी प्रशासन में हिस्सा दे दिया। राज्य की स्थिति खराब होने लगी। सत्ता पर अनेक प्रभावशाली लोग अधिकार करने लगे। 1542 ई. में अच्युत की मृत्यु हो गई। उसका अवयस्क पुत्र वेंकट प्रथम शासक बना मगर सत्ता उसके मामा सलकराज सिरूमल के हाथ में रही। कुछ समय बाद अच्युत का भतीजा सदाशिवराज शासक बनाया गया। मगर वह भी दुर्बल शासक निकला। शासन की वास्तविक शक्ति मंत्री रामराय के हाथों में आ गई।

तालीकोटा का युद्ध – विजयनगर राज्य का मंत्री रामराय कूटनीतिज्ञ था। वह बहमनी साम्राज्य के अवशेषों पर बने पाँच राज्यों में फूट डालने की नीति अपनाना चाहता था। किन्तु, पाँचों राज्य बीजापुर, बीदर, बरार, गोलकुण्डा और अहमदनगर धर्म के नाम पर एक हो गए। पाँचों राज्यों ने मिलकर विजयनगर पर आक्रमण कर दिया। लगभग 1565 ई. में **तालीकोटा** का युद्ध हुआ। विजयनगर की सेनाएं परास्त हुई और इस्लामी सेनाओं ने विजयनगर को नष्ट कर दिया।

आरवीडु वंश – रामराय के भाई तिरुमल ने पेणुगोण्डा को राजधानी बनाकर विजयनगर राज्य के अस्तित्व को बनाए रखने का प्रयास किया। लगभग 1570 ई में उसने सदाशिव को सिंहासन से हटाकर आरवीडु वंश की नींव डाली। 1572 ई. में तिरुमल की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी पतनशील विजयनगर को संभाल नहीं सके और जल्दी ही विजयनगर राज्य अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्यों में विभक्त हो गया।

विजयनगर की शासन-व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य के शासन का स्वरूप निरंकुश राजतन्त्र था। राजा के अधिकार अनियन्त्रित और असीमित थे। राज्य का प्रमुख आधार हिन्दू धर्म था। विजयनगर का प्रशासन केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं स्थानीय शासन में विभक्त था।

विजय नगर के केन्द्रीय प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका सम्राट,मंत्रि परिषद, राज-परिषद, राजसभा, युवराज आदि की होती थी।

राज्य में सम्राट का पद प्रमुख होता था, उसे राय कहा जाता था। राज्य की समस्त शक्तियाँ उसके पास होती थी। वह स्वयं राज्य के प्रशासन का संचालन करता था। युद्ध की घोषणा तथा सन्धि, अधिकारी-कर्मचारी की नियुक्ति, न्याय, कानून आदि की व्यवस्था उसी के हाथ में थी।

राज्य के संचालन के लिए एक केन्द्रीय सचिवालय होता था जिसमें विभिन्न विभाग, उनके अध्यक्ष,सचिव तथा अधिकारी होते थे।

राज्य के अधिकारी, कर्मचारियों को वेतन के बदले भूमि दी जाती थी। इस व्यवस्था को **नायकट व्यवस्था** कहा जाता था। सैनिक अधिकारियों को भी कृषि योग्य भूमि दी जाती थी। सैनिक अधिकारी **नायक** कहलाते थे और दी गई भूमि **अमरम** कहलाती थी।

न्याय व्यवस्था के लिए राजा सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। वह स्वयं न्यायाधीशों की नियुक्ति करता था। प्रान्तों में प्रान्तपतियों तथा ग्रामों में पंचायतों द्वारा न्याय होता था। न्याय देने में विलम्ब नहीं किया जाता था। हिन्दू न्याय विधान प्रचलित था। फौजदारी के कानून कठोर थे। प्रायः अंग-भंग एवं मृत्यु दण्ड भी दिया जाता था।

कृषि और सिंचाई के विकास के लिए राज्य प्रयास करता था। गरम मसाले का निर्यात किया जाता था। सिंचाई कार्यों के लिए राज्य प्रोत्साहन देता था। नहरें और तालाब बनवाना पुण्य का कर्म माना जाता था।

भूमि कर का निर्धारण भूमि की उत्पादकता पर निर्भर करता था। सम्पूर्ण राज्य में भूमिकर समान नहीं था। चारागाह कर, विवाह कर, सम्पत्ति कर, व्यापारिक कर, उद्यान कर, शिल्पकला की वस्तुओं आदि पर कर राज्य द्वारा लगाए गए थे। करों की अधिकता होने पर भी प्रजा सुखी थी।

विजयनगर राज्य का आधार सेना थी। पड़ोसी राज्यों से सुरक्षा के लिए एक विशाल सेना का गठन किया गया था।

प्रान्तीय शासन – साम्राज्य को प्रान्तों में विभक्त किया गया था। प्रान्त **कोट्टम या वलनाडु** में विभक्त थे, कोट्टम जिला था जो नाडुओं में विभक्त था। नाडू नगरों में विभक्त थे, ग्राम राज्य की सबसे छोटी इकाई था। प्रान्तों का भार राजपरिवार के किसी व्यक्ति पर अथवा शक्तिशाली सामन्त के पास होता था।

स्थानीय शासन – प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम था। ग्राम के प्रशासन के लिए प्रतिनिधि सभा होती थी जिसमें ग्राम के प्रतिनिधि होते थे। ग्राम पंचायत का प्रधान **आयगंट** कहलाता था। इसको न्याय एवं दण्ड देने के भी कुछ अधिकार दिए गए थे। वह राजकर भी वसूल करता था। ग्राम सभा अपने अधीन भूमि को विक्रय एवं दान भी कर सकती थी। ग्राम सभा को कुछ मामलों में दीवानी तथा फौजदारी के मुकदमों का निर्णय करने का अधिकार दिया गया था।

बहमनी राज्य

उत्तर भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात् दक्षिण के विभिन्न राज्य स्वतन्त्र बने रहे। आवागमन की कठिनाईयों एवं दूरस्थ क्षेत्रों में होने के कारण दिल्ली के सुल्तान दक्षिण की राजनीति से दूर ही रहे। अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का प्रथम सुल्तान था, जिसने शक्ति के बल पर दक्षिण के राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। किन्तु उसकी मृत्यु के साथ ही दक्षिण के राज्य एक बार फिर स्वतन्त्र हो गए। मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण के राज्यों पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया, इसमें वह सफल भी हुआ। किन्तु कुछ समय बाद ही उसे निरन्तर विद्रोहों का सामना कर पड़ा। मुहम्मद तुगलक के शासन काल में दक्षिणी मुस्लिम अमीरों ने विद्रोह किया और बहमनी राज्य की स्थापना हुई। बहमनी राज्य एक शक्तिशाली मुस्लिम राज्य के रूप में उभर कर आया।

दिल्ली सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियों, अत्याचारों एवं योजनाओं से नाराज दक्षिण भारत के विदेशी मुस्लिम अमीरों ने कुतलुग खाँ के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। सुल्तान की सेनाओं को विद्रोह दबाने में सफलता नहीं मिली। विद्रोहियों का देवगिरि पर अधिकार हो गया। लगभग 1347 ई. को हसन गंगू हसन अब्दुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह के नाम से राजगद्दी पर बैठाया गया। बहमनी राज्य दक्षिण भारत में लगभग 1347 ई. से 1526 ई. तक बना रहा।

सुल्तानों की अयोग्यता एवं अनेक अत्याचार पड़ोसी राज्यों के साथ निरन्तर युद्ध, विदेशी एवं दक्षिणी भारतीय अमीरों के संघर्ष, महमूद गंवा की हत्या, अमीरों में मतभेद आदि कारण बहमनी राज्य के पतन में सहायक सिद्ध हुए।

10.8 मुगल साम्राज्य

भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखने वाला बाबर मध्य एशिया के राज्य फरगना के शासक का पुत्र एवं तैमूर का वंशज था। बाबर के आक्रमण के समय उत्तरी और दक्षिणी भारत में राजनीतिक अस्थिरता थी। आपसी फूट, संघर्ष एवं षडयंत्र का बोलबाला था। इस राजनीतिक अव्यवस्था का बाबर ने पूरा लाभ उठाया।

बाबर ने भारत की सीमाओं पर आक्रमण किए जिनमें उसे सफलता मिली। 1526 ई. में बाबर अपनी सेना एवं तोपखाने के साथ पानीपत के मैदान में आ गया जहाँ उसका सामना दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी ने किया। युद्ध में इब्राहीम मारा गया और विजय बाबर के हाथ लगी। बाबर का दिल्ली और आगरा पर अधिकार हो गया।

भारत में शासन करने के लिए बाबर राजपूतों की शक्ति का दमन करना चाहता था। दूसरी ओर राजपूत शासक भी राणा सांगा के नेतृत्व में मुगलों को भारत से निष्कासित करने के लिए उद्यत थे। 1527 ई. को बाबर व राणा सांगा की सेनाओं के मध्य खानवा के मैदान में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें राणा सांगा ने वीरतापूर्वक सामना किया लेकिन युद्ध में तोपखाने और तुलगमा पद्धति के उपयोग ने बाबर को निर्णायक विजय दिलवाई।

1530 ई. में बाबर की मृत्यु हो गयी। बाबर ने 'तुजुके बाबरी' में अपने जीवन और भारत की सुन्दरता व तत्कालीन राजनीति का वर्णन किया है।

हुमायूं – बाबर की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र हुमायूं 1530 ई. में दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा। हुमायूं

को अपने रिश्तेदारों, भाइयों, राजपूतों, अफगानों, रिक्त राजकोष एवं प्रजा के असन्तोष का सामना करना था। हुमायूं के प्रतिद्वंदी अफगान सरदार थे, इनमें शेरशाह प्रमुख था। सन् 1539 ई. में शेरशाह ने हुमायूं को चौसा के युद्ध में परास्त किया एवं दिल्ली छोड़ने पर मजबूर कर दिया। विपदा के दिनों में उसे अमरकोट के राजपूत राजा वीरसाल ने संरक्षण दिया। अमरकोट में ही 1542 ई. को अकबर का जन्म हुआ।

शेरशाह सूरी : शेरशाह सूरी बिहार की एक छोटी सी जागीर के अफगान सरदार का पुत्र था। बाबर के हाथों पानीपत और घाघरा के युद्धों में परास्त होने पर अफगानों की शक्ति पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुई थी। शेरशाह ने उन्हें पुनः संगठित कर हुमायूं को अपदस्थ करके दिल्ली राज सिंहासन पर अधिकार कर लिया। हुमायूं को लगभग 15 वर्ष निर्वासित जीवन जीना पड़ा। इस अवधि में शेरशाह और उसके उत्तराधिकारियों ने उत्तर भारत पर शासन किया। शेरशाह के अल्पकालीन शासन का भारतीय इतिहास में प्रमुख स्थान है क्योंकि उसने अफगानों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया और प्राचीन शासन व्यवस्था को पुर्नजीवित कर उसमें मौलिक सुधार किये जिसने भविष्य के लिए आधार स्तम्भ का कार्य किया। *शेरशाह ने जनता के हितों को सर्वोपरि रखा तथा कुशल*

प्रशासन की नींव रखीं जिसका लाभ मुगलों को मिला। उसने सैनिक प्रशासन, न्याय व्यवस्था एवं भूराजस्व के क्षेत्र में अनेक कार्य प्रारम्भ किये जिनका अनुसरण बाद में अकबर ने किया। शेरशाह ने अपने साम्राज्य को 'सरकारों' एवं सरकारों को 'परगनों' में विभाजित किया। उसने मुद्रा व्यवस्था में सुधार किये। उसके द्वारा चलाया गया चांदी का सिक्का रूपया के नाम से जाना जाता था। शिक्षा के क्षेत्र में मदरसों का निर्माण करवाया। उसने यात्रियों के लिए कुंओं व सरायों की व्यवस्था की और वृक्षारोपण कराया। शेरशाह ने समस्त भूमि की माप करवाई। उसने मौर्यकाल में निर्मित कलकत्ता से पेशावर को जोड़ने वाले पुराने राजमार्ग ग्रॉन्ड ट्रंक रोड का पुर्ननिर्माण (वर्तमान जी.टी.रोड) करवाया। आगरा से राजस्थान एवं गुजरात तक तथा दक्षिण में बुरहानपुर तक सड़कों का निर्माण करवाया। उसकी गुप्तचर व्यवस्था सुदृढ़ थी।

सन् 1545 में जब शेरशाह ने कालिंजर के किले का घेरा डाला था तभी बारूद के एक ढेर में आग लगने से उसकी मृत्यु हो गयी। शेरशाह के उत्तराधिकारी अयोग्य सिद्ध हुए। प्रमुख सरदार और अधिकारी आपस में लड़ने लगे।

हुमायूं ने इस स्थिति का लाभ उठाया। ईरान के शाह की सहायता से हुमायूं ने कन्धार, काबुल, पंजाब, दिल्ली और आगरा पर विजय प्राप्त कर ली व शासक बना। 1556 ई. को पुस्तकालय की सीढियों से उतरते समय पैर फिसलने से उसकी मृत्यु हो गई।

अकबर (1556 - 1605 ई.) - हुमायूं के देहान्त के समय अकबर अपने संरक्षक बैरमखां के साथ पंजाब में गुरूदासपुर जिले के कलानौर नामक स्थान पर था। बैरमखां ने कलानौर में ही 1556 ई. को उसका राज्याभिषेक कर दिया, उस समय अकबर की आयु 13 वर्ष की थी।

हुमायूं के देहान्त के तत्काल बाद ही अफगान आदिलशाह सूर के मंत्री हेमू ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की और दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठ गया। 1556 ई. में अकबर अपने संरक्षक बैरमखां के साथ सेना लेकर पानीपत के मैदान में पहुँच गया। हेमू व अकबर की सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। शत्रु सेना का एक तीर हेमू की आंख में लगा और हेमू पकड़ा गया और उसको बैरमखां ने मार दिया। इस प्रकार दिल्ली और आगरा पर अकबर का अधिकार हो गया।

प्रारम्भ में अकबर ने बैरमखां के संरक्षण में शासन कार्य प्रारंभ किया किन्तु 1560 ई. में स्वतंत्रता पूर्वक शासन करना प्रारम्भ कर दिया। उसने 1562 ई. में युद्ध बन्दियों को गुलाम बनाने की प्रथा तथा 1563 ई. में तीर्थ यात्री कर समाप्त कर दिया। 1564 ई. में हिन्दुओं से लिया जाने वाला जजिया कर समाप्त कर दिया। इस प्रकार वह हिन्दूओं को अपना मित्र बनाने का प्रयास करने लगा।

अकबर ने सम्पूर्ण भारत को जीतने के लिए दल, बल, भेद एवं मित्रता की नीति का सहारा लिया। मालवा, जौनपुर, चुनार, मेरठ, गोंडवाना, रणथम्भौर, कालिंजर, मारवाड़, गुजरात, बिहार, बंगाल, काबुल, कश्मीर, सिन्ध, उड़ीसा तथा दक्षिण भारत के भागों पर अकबर ने विजय प्राप्त कर ली। 1567 - 1568 ई. में एक लम्बे संघर्ष के बाद उसका चित्तौड़ पर अधिकार हो गया। जयमल तथा फत्ता के नेतृत्व में राजपूतों ने अकबर को कठिन चुनौती दी। अकबर को चुनौती देने वालों में गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती तथा मेवाड़ का शासक महाराणा प्रताप प्रमुख थे।

अकबर एक चतुर सम्राट था। वह जानता था कि राजपूत स्वामी भक्त होते हैं और अपनी स्वामी भक्ति जान पर खेलकर भी निभाते हैं, इसलिए राजपूतों को साथ लेकर चलना पड़ेगा। वह समस्त राजपूत राज्यों को समाप्त करने का साहस नहीं रखता था, इसलिए राजपूतों के प्रति उसने अपनी अलग से नीति निर्धारित की। अकबर ने राजपूत राजाओं से दोस्ती कर श्रेष्ठ एवं स्वामीभक्त राजपूत वीरों को अपनी सेवा में लिया, जिससे मुगल साम्राज्य काफी दिन तक जीवित रहा। अकबर ने कुछ राजपूत राजाओं जैसे भगवानदास, राजा मानसिंह, बीरबल एवं टोडरमल को उच्च मनसब प्रदान किया था। अकबर ने राजपूतों से दोस्ती एवं वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। अकबर ने आमेर

(जयपुर), बीकानेर तथा जैसलमेर की राज कन्याओं से विवाह किए। इस प्रकार अकबर के एक स्थाई और शक्तिशाली विस्तृत साम्राज्य की कल्पना को साकार करने में राजपूतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जिन राजपूत राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की उनके विरुद्ध उसने युद्ध किए। अकबर द्वारा एक सर्वमान्य धर्म, दीन-ए-इलाही की स्थापना की गई। फतहपुर सीकरी में एक इबादतखाना (प्रार्थना - गृह) बनवाया जहाँ वह सभी धर्मों के लोगों के साथ धार्मिक चर्चा करता था।

जहाँगीर (1605-1627 ई.) - अकबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जहांगीर गददी पर बैठा। जहाँगीर का जन्म 1569 ई. में हुआ था। जहाँगीर ने अनेक विवाह किए थे जिनमें शेर अफगान की विधवा नूरजहाँ से किया गया विवाह प्रमुख था।

जहाँगीर, नूरजहाँ के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित था कि उसने राज्य का सम्पूर्ण भार उसी पर छोड़ दिया। जिसका परिणाम यह निकला कि उसका अन्तिम समय दु:खों में व्यतीत हुआ। जहाँगीर के एक पुत्र खुर्रम (शाहजहाँ) ने विद्रोह कर दिया जिसके कारण राज्य की स्थिति चिन्ताजनक हो गई। 1627 ई. में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी और शाहजहाँ ने अपने अन्य भाईयों का वध करके राजसिंहासन प्राप्त कर लिया।

शाहजहाँ (1627-1658 ई.) - जहांगीर के बाद शाहजहाँ सम्राट बना। शासक बनते ही उसने खानजहाँ लोदी का विद्रोह, बुंदेलखण्ड तथा नुरपुर के जमींदार जगतसिंह के विद्रोहों का दमन किया। पुर्तगालियों से युद्ध कर उन्हें खदेड़ दिया। उसने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के उददेश्य से दक्षिण भारत के अहमदनगर, गोलकुण्डा, बीजापुर पर आक्रमण किए। मराठों के साथ भी मुगल सेना का संघर्ष हुआ। शाहजहाँ के चार पुत्र दाराशिकोह, शाहशुजा, औरंगजेब और मुराद थे। शाहजहाँ के जीवनकाल में ही सिंहासन के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। जिसमें औरंगजेब को सफलता प्राप्त हुई। उसने शाहजहाँ को कैद में डलवा दिया।

शाहजहाँ, स्थापत्य कलाप्रेमी था इसलिए उसने अनेक इमारतों का निर्माण कराया। भवनों के निर्माण पर जो धन व्यय हुआ वह किसानों एवं जनता पर भारी कर लगाकर एकत्रित किया गया था। जिसके कारण जनता को अनेक कष्ट भोगने पड़े। शाहजहाँ के कलाप्रेम से खजाना खाली हो गया था। कृषकों से उपज का आधा भाग तक कर के रूप में लिया जाता था। जनता करों के बोझ से कष्टप्रद स्थिति में थी।

औरंगजेब (1658-1707 ई.)- शाहजहाँ के शासन काल में ही उसके चार पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार का संघर्ष प्रारम्भ हो गया। उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब विजयी हुआ और वह अपने तीन भाइयों का वध करके दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसने अपने पिता शाहजहाँ को आगरा के लाल किले में कैद कर दिया जहाँ आठ वर्ष बाद 1666 ई में उसकी मृत्यु हो गई।

औरंगजेब ने राजपूतों, जाटों, सिक्खों और मराठों को भी अपना विरोधी बना लिया जिसके कारण राज्य में निरन्तर विद्रोह हुए। शिवाजी ने उसकी हिन्दू विरोधी नीति के कारण उसका सामना किया और एक स्वतन्त्र मराठा राज्य की नींव डाली। सिक्खों के गुरू तेग बहादुर को यातनाएं देकर मार डाला गया। तब गुरू गोविन्द सिंह ने औरंगजेब का सामना करने के लिए सिक्ख सेना (खालसा) को तैयार किया। दुर्गादास राठौड़ जैसे राजपूतों ने औरंगजेब को चुनौतियां दी। ताराबाई ने एक लम्बे समय तक मराठा स्वतन्त्रता के लिए औरंगजेब को टक्कर दी।

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गयी और उसी के साथ ही मुगल साम्राज्य का पतन भी प्रारम्भ हो गया। यद्यपि 1707 से 1857 ई. तक दिल्ली में मुगल सत्ता बनी रही, मगर वह नाम मात्र की मुगल सत्ता थी।

10.9 भारत में मुगल सत्ता का विरोध

1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित करके दिल्ली में मुगल सत्ता की नींव डाली थी। 1526 ई में स्थापित मुगल शासन 1707 ई. तक निरन्तर अच्छी स्थिति में चलता रहा। 1707 ई.

से 1857 ई. तक दिल्ली में मुगल सत्ता नाम मात्र के लिए थी। 1526 ई. से 1707 ई. तक बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब ने सम्पूर्ण भारत को अपने अधीन करने के लिए साम-दाम-दण्ड, भेद की नीति का अनुसरण किया, जिसमें वे सफल हुए। भारत के भिन्न-भिन्न भागों से हिन्दू-राजपूत राजाओं की चुनौती उन्हें लगातार मिलती रही। राज्य की समस्याओं का समाधान करने के लिए हिन्दू राजपूत राजाओं के सामने दो मार्ग थे पहला, वह अन्य राजपूत राजाओं के समान मुगल शासक अकबर के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दे और मुगल व्यवस्था का अंग बनकर परतन्त्रता का जीवन व्यतीत करे। दूसरा मार्ग था कि वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखे और अपने देश के गौरव की रक्षा करें, इस मार्ग पर चलने के लिए उसे घातक युद्ध के लिए तैयार होना था और अपने तथा अपने परिवार के जीवन एवं सुख का मोह छोड़ना था। अपने संस्कारों, विचारों तथा भारत के सम्मान की रक्षा के लिए कुछ राजपूत राजाओं ने दूसरे मार्ग पर चलने का दृढ निश्चय किया अर्थात मुगलों से युद्ध करने का विकल्प चुना। इन भारतीय राजाओं व शासकों ने मुगल शासकों से अपनी स्वतंत्रता के बदले न तो मित्रता की और ना ही समर्पण किया, बल्कि वीरता के साथ मुगलों को हर मोड़ पर कड़ी चुनौतियां दी। इनमें मेवाड़ के शासक राणा सांगा, महाराणा प्रताप, गोंडवाना की रानी दुर्गावती तथा मराठा शासक शिवाजी, सिख गुरू गोविन्द सिंह प्रमुख थे।

मेवाड़ का शासक महाराणा प्रताप

मेवाड़ के शासक **राणा सांगा** ने बाबर को खानवा के मैदान में कड़ी टक्कर दी। दुर्भाग्य से राणा सांगा पराजित हुए मगर जब तक वह जीवित रहे उन्होंने हार नही मानी। 1528 ई. को राणा सांगा की मृत्यु के बाद ही बाबर ने अपना अभियान आगे बढ़ाया।

महाराणा प्रताप

1528 ई. में राणा सांगा की मृत्यु के बाद मुगल सत्ता का प्रतिरोध महाराणा उदय सिंह (1537-1572 ई.) ने किया। उदय सिंह की 1572 ई. में मृत्यु के बाद उनका पुत्र राणा प्रताप मेवाड़ का शासक बना। शासक बनने के बाद घर और बाहर की अनेक समस्याओं का उन्हें सामना करना पड़ा था। पिता के साथ उन्होंने जंगलों, घाटियों और पहाड़ों में रहकर कठोर जीवन बिताया था। पहाड़ी क्षेत्रों में वह जनता के बीच काफी लोकप्रिय थे। पहाड़ी क्षेत्रों के लोग उन्हें कीका (छोटा बच्चा) के नाम से सम्बोधित करते थे। मुगलों के अनेक आक्रमणों का सामना मेवाड़ कर चुका था, इसलिए राज्य की व्यवस्था संतोषजनक नहीं थी। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से राज्य में स्थिरता नहीं थी। राज्य के अनेक प्रदेशों पर मुगल अधिकार कर चुके थे जिसके कारण राज्य की आय और प्रतिष्ठा में कमी आई थी।

महाराणा प्रताप जीवित रहने तक मुगल सत्ता के प्रमुख शासक अकबर को कड़ी चुनौतियां दी। मुगल सत्ता को टक्कर देने के लिए **राणा प्रताप** ने मेवाड़ को संगठित करना प्रारम्भ किया। सामन्तों और भीलों को संगठित किया। राणा प्रताप ने प्रथम बार भीलों को अपनी सैन्य व्यवस्था में उच्च पद देकर उनके सम्मान को बढ़ावा दिया। गोगुन्दे के स्थान पर अपना निवास कुंभलगढ़ को बनाया ताकि अकबर उन पर आसानी से आक्रमण ना कर सके। उसने जनसम्पर्क द्वारा राज्य में मुगल सत्ता के विरुद्ध व्यापक जागरण चलाया। उनके उपायों से मेवाड़ में एक सूत्रता आई और सम्पूर्ण मेवाड़ मुगल सत्ता के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ।

हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.) - अकबर की आंखों में मेवाड़ की स्वतन्त्रता कांटे की तरह चुभ रही थी। राणा प्रताप ने अकबर के अधीन आने, मित्रता करने अथवा वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने से इंकार कर दिया था। अकबर ने राणा प्रताप को समझाने के अनेक प्रयास किए, मगर उसे सफलता नहीं मिली। अन्त में

अकबर ने मेवाड़ की स्वतन्त्रता को समाप्त करने के लिए युद्ध का रास्ता अपनाया। 21 जून 1576 ई को दोनों सेनाओं के बीच युद्ध आरम्भ हो गया। मानसिंह अकबर की सेना का नेतृत्व कर रहा था। दोनों तरफ के हजारों सैनिक मारे जा चुके थे। राणा प्रताप अपने साथी लूणकर्ण, रामशाह, ताराचन्द्र, पूँजा, हकीम सूर आदि के साथ शत्रु की फौज को चीरता हुआ मानसिंह के हाथी के पास पहुँच गया। राणा के घोड़े चेतक ने अपने अगले पांवों को हाथी के दाँतों पर रख दिया। राणा ने मानसिंह पर भाले का वार किया मगर वह बच गया। शत्रु फौज ने राणा को घेर लिया। मगर राजपूत वीर राणा को शत्रु दल के बीच से निकाल कर ले गए। घायल चेतक की रास्ते में मृत्यु हो गई। मगर युद्ध चलता रहा। युद्ध में मानसिंह को विजय नहीं मिली। गोगुन्दे पर अकबर की सेनाओं का अधिकार हो चुका था।

राणा प्रताप को अपने राज्य के कुछ भागों को खोना पड़ा मगर उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने लगातार मुगलों से युद्ध जारी रखा और अपने खोये हुए प्रदेशों के अनेक भागो को प्राप्त कर लिया। उन्होंने चावण्ड में नयी राजधानी बनाई और राज्य में सुव्यवस्था स्थापित की। 19 जनवरी, 1597 ई. को उनका देहान्त हो गया। अकबर अन्त तक महाराणा प्रताप को झुकाने में सफल न हो सका। इस प्रकार महाराणा प्रताप अपने देश के प्रति मरते दम तक वीरता और साहस का परिचय दिया व अकबर के अहंकार का मानमर्दन किया।

रानी दुर्गावती

रानी दुर्गावती मध्यकालीन भारतीय इतिहास की महानतम् वीरागंना थी। उसने अपनी वीरता, अपूर्व साहस और धैर्य के साथ दिल्ली के मुगल शासक अकबर की सामाज्य लिप्सा का सामना किया। रानी दुर्गावती महोबा की चंदेल राजकुमारी थी। बचपन से ही उसने घुड़सवारी, शस्त्र-परिक्षण और किशर का अभ्यास किया था। उनका विवाह गढ़ा के शासक दलपति शाह के साथ हुआ था। गढ़ा राज्य की सीमा में वर्तमान मध्यप्रदेश के उत्तरी जिले भी सम्मिलित थे।

रानी दुर्गावती

दलपतिशाह ने अपने राज्य की राजधानी गढा के स्थान पर सिंगोरगढ़ स्थानांतरित कर दी थी। विवाह के लगभग 8 वर्ष बाद दलपतिशाह का निधन हो गया। दुर्गावती को अवयस्क पुत्र वीरनारायण की संरक्षिका के रूप में राज्य का कार्यभार ग्रहण करना पड़ा। रानी ने बहुत ही कुशलता और वीरता के साथ राज्य का प्रबन्ध संभाला। उसने मालवा के शासक बाजबहादुर के आक्रमण को चतुराई के साथ असफल कर दिया। दिल्ली के सम्राट अकबर ने गढ़ा राज्य की विशालता और धन सम्पन्नता के बारे में सुना तो उसने अपनी साम्राज्य लिप्सा की पूर्ति के लिए अपने सेनापति आसफ खां को एक बड़ी सेना के साथ गढ़ा पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया। रानी दुर्गावती ने अकबर की अधीनता के स्थान पर उसकी सेनाओं के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। 1564 ई. में आसफ खां ने गढ़ा पर आक्रमण कर दिया। रानी दुर्गावती ने अपने पुत्र वीरनारायण के साथ आसफ खां की सेना का सामना किया। वीरनारायण घायल हुआ।

रानी दुर्गावती ने बहुत ही वीरता के साथ आसफ खां की सेनाओं के साथ युद्ध किया किन्तु अन्ततः वह लड़ते-लड़ते गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायलावस्था में वीरांगना दुर्गावती आगे युद्ध जारी रखने में असमर्थ हो गई किन्तु वह नहीं चाहती थी कि अकबर के सैनिक उसको बंदी बनाकर अपमानित करें। इसीलिए उसने स्वयं को कटार मार कर अपना बलिदान कर दिया पुत्र वीरनारायण भी युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। अपने को असहाय मानकर राजमहल की महिलाओं ने भी जौहर कर लिया।

इस तरह गढ़ा पर आसफ खां का अधिकार हो गया और उसे राज्य व महल से धन-दौलत प्राप्त हुई। गढ़ा का पतन अवश्य हुआ मगर रानी दुर्गावती ने अपने अपूर्व शौर्य के द्वारा इस बात को सिद्ध कर दिया कि

सम्राट अकबर किसी भारतीय नारी के राज्य को बिना लड़े प्राप्त नहीं कर सकता। अकबर के शासन पर गढ़ा का युद्ध एक कलंक है कि उसने एक शान्त राज्य पर अकारण ही युद्ध थोपा और उसको विजित किया।

छत्रपति शिवाजी

भारत में मुगल शासन का सबसे सशक्त प्रतिरोध शिवाजी के नेतृत्व में मराठों ने किया। शिवाजी और मराठों के उत्कर्ष में मुगल शासकों की साम्राज्य लिप्सा, हिन्दू, विरोधी नीति तथा धार्मिक कट्टरता की नीति, प्रमुख रूप से कार्य कर रही थी। सन्त तुकाराम, रामदास, वामन-पण्डित और एकनाथ ने मराठों में राष्ट्रधर्म का बीजारोपण किया था। मराठों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करने में राष्ट्रधर्म की प्रमुख भूमिका थी।

छत्रपति शिवाजी

महाराज शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को महाराष्ट्र के शिवनेर के पहाड़ी किले में हुआ था। उनकी माता का नाम जीजाबाई तथा पिता का नाम शाहजी भोंसले था। अपनी माता तथा गुरू और संरक्षक दादाजी कोण्डदेव से शिवाजी ने हिन्दू धर्म तथा शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बचपन में ही सैनिक शिक्षा भी प्राप्त कर ली। उन्होंने अपनी माता से सच्चाई, चरित्र, वीरता, धर्म परायणता आदि का पाठ सीखा। शिवाजी को अपने पिता का बीजापुर के सुल्तान के यहाँ नौकरी करना पसन्द नहीं था। इसलिए उन्होंने स्वयं ही मुगलों से टक्कर लेने का निश्चय किया और एक सैनिक टुकड़ी का गठन किया। 1646 ई. में उन्होंने बीजापुर से तोरणा नामक पहला किला जीता। तोरणा के पाँच मील पूर्व में उन्होंने रायगढ़ नामक नया किला बनवाया। इसके बाद वे एक के बाद एक किले जीतते चले गए। उन्होंने चाकन, कोंडाना, पुरन्दर, जावली, कोंकण आदि पर विजय प्राप्त की।

बीजापुर के सुल्तान ने अपने सेनापति अफजल खां को शिवाजी के साथ संधि-वार्ता के बहाने से भेजा। शिवाजी ने अफजल खां के इरादों को भाँप लिया और उसका वध कर दिया।

औरंगजेब ने शिवाजी को फँसाने के लिए कई योजनाएँ बनाईं, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। अनेक पराजयों से दुखी होकर औरंगजेब ने प्रसिद्ध सेनानायक राजा जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जयसिंह और शिवाजी की सेनाओं में अनेक मुठभेड़ हुई, किन्तु निष्कर्ष न निकलता देख दोनों के बीच 1665 ई. में पुरन्दर की सन्धि हो गई।

शिवाजी जयसिंह के साथ औरंगजेब से मिलने के लिए आगरा आए। मगर औरंगजेब ने उन्हें धोखे से नजरबन्द कर दिया। औरंगजेब उन्हें बन्दीगृह में ही मरवा देना चाहता था। शिवाजी ने रोगी होने का बहाना किया और रोग ठीक करने के लिए साधु सन्तों में मिठाई बंटवाने लगे। एक दिन मिठाई के टोकरों में बैठकर शिवाजी और उनके पुत्र शम्भाजी आगरा से बाहर निकल गए। शिवाजी के बच निकलने से औरंगजेब बहुत क्रोधित हुआ।

शिवाजी ने 1674 ई. में अपना राज्यभिषेक कराया और छत्रपति बने। उन्होंने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। शिवाजी ने राज्यभिषेक के बाद सम्पूर्ण राज्य का संगठन किया और राज्य का प्रशासनिक संगठन किया। शिवाजी का शासन जन कल्याण पर आधारित था। उनके प्रशासन में अष्टप्रधान का महत्व था। अष्टप्रधान का अर्थ आठ मन्त्रियों से था जो शिवाजी के प्रति उत्तरदायी थे। 1680 ई. में उनका देहान्त हो गया।

शासक और प्रबन्धक के रूप में शिवाजी ने उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने एक शक्तिशाली राज्य का निर्माण किया था। शिवाजी ने दक्षिण भारत से मुगल सत्ता को उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। शिवाजी के बाद उनके उत्तराधिकारियों शाहजी, राजाराम साहू, ताराबाई आदि ने मुगलों के साथ संघर्ष जारी

रखा। बाद में पेशवाओं ने दिल्ली की मुगल सत्ता को गम्भीर चुनौतियां दी। शिवाजी ने जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मराठा राज्य की स्थापना की थी उस पर मराठा सेनानायक आगे बढ़ते गए और राष्ट्रहित के लिए प्रयत्नशील रहे।

सिक्ख

गुरूनानक द्वारा स्थापित किये गये धर्म के अनुयायी सिक्ख कहलाते हैं। सत्रहवीं शताब्दी तक सिक्ख धर्म पंजाब के अनेक कारीगरों व किसानों का धर्म बन चुका था। गुरूनानक सिक्खों के प्रथम गुरू थे। उनके बाद नौ अन्य गुरूओं ने सिक्ख संप्रदाय को आगे बढ़ाया। इनके अंतिम गुरू गोविन्द सिंह थे। आरंभिक गुरूओं का ध्यान केवल धार्मिक पहलुओं पर ही रहा किन्तु धीरे-धीरे सिक्खों के गुरू उनके सैनिक नेता भी बनने लगे। सातवें गुरू की मृत्यु के पश्चात् औरंगजेब ने गुरूओं के उत्तराधिकार के झगड़े से फायदा उठाने का प्रयत्न किया। इसी बीच सिक्खों की शक्ति लगातार बढ़ रही थी। इस बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए मुगल प्रशासन ने 1675 ई. में गुरू तेगबहादुर को फांसी का हुक्म दिया जिससे सिक्ख समुदाय औरंगजेब से बहुत नाराज हो गया। दसवें गुरू गोविन्दसिंह ने सिक्खों को सैनिक के रूप में संगठित करके मुगल सेनाओं के विरूद्ध युद्ध करने के लिए तैयार किया। गुरू गोविन्दसिंह ने 1699 ई. में खालसा नामक एक संगठन की स्थापना की। खालसा एक जातिविहीन सैनिक संगठन था जिसमें सभी लोगों को बिना जाति भेद के शामिल करने की व्यवस्था थी। खालसा संगठन के लोगों को पांच 'क'- कड़ा, कृपाण, केश, कच्छा व कंघा को अपनाना आवश्यक था। सिक्खों के नाम के आगे 'सिंह' शब्द लगाने की प्रथा उन्होंने शुरू करवाई। सिक्ख समुदाय ने मुगल साम्राज्य के सामने चुनौतियां खड़ी कर दी।

गुरू गोविन्दसिंह

मुगल सत्ता के पतन के कारण

बाबर द्वारा जिस मुगल सत्ता की नींव डाली गई उसका पतन औरंगजेब के काल से दिखाई देने लगा था तथापि 1707 ई. में उसकी मृत्यु के साथ ही मुगल सत्ता का पतन तीव्र गति से आरम्भ हो गया। इस विशाल साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं-

औरंगजेब का साम्राज्य, नीतियां व युद्ध - मुगल साम्राज्य के पतन में औरंगजेब के उत्तरदायित्व को प्रमुख रूप से सामने रखा जा सकता है। उसकी धार्मिक कट्टरता और हिन्दू विरोधी नीति प्रमुख कारणों में से एक थी। उसने अपनी उत्पीड़न की नीतियों के कारण जाटों, राजपूतों, मराठों, सिक्खों आदि को राज्य का दुश्मन बना लिया। उसने हिन्दुओं का धार्मिक उत्पीड़न किया जिससे राजपूतों का सहयोग मिलना बन्द हो गया। मराठों और जाटों ने उसके साम्राज्य पर गहरे आघात किए। जिसके कारण मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा।

औरंगजेब ने दक्षिण भारत को दिल्ली के अधीन करने के लिए 25 वर्ष तक दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों के साथ युद्ध किए जिसमें उसे धन और जन की अपार हानि उठानी पड़ी। इन युद्धों ने साम्राज्य की जड़ों को हिला कर रख दिया।

करों की अधिकता - मुगल शासकों ने अपने सुख-सुविधाओं तथा युद्धों के लिए प्रजा पर भारी-भारी कर लगाए जिनको चुकाना बहुत कठिन हो गया था। किसानों और आम जनता में विद्रोह के स्वर गूंजने लगे थे।

साम्राज्य की विशालता - भारत एवं भारत के बाहर मुगल साम्राज्य की विशालता भी पतन का कारण बनी। एक विशाल साम्राज्य शक्तिशाली केन्द्र के द्वारा ही संचालित हो सकता है। कमजोर केन्द्र के कारण मुगल साम्राज्य भी टूटना आरम्भ हो गया। अकबर ने अपनी कूटनीति द्वारा सभी को साथ लेकर साम्राज्य को बचाए रखा मगर उसके उत्तराधिकारी इसमें सफल नहीं हो सके।

सरदारों एवं राजकुमारों के विद्रोह – मुगल साम्राज्य के पतन में निष्ठावान सरदारों एवं राजकुमारों के विद्रोहों ने भी सहायता की। सलीम, खुसरो, शाहजहाँ, औरंगजेब के विद्रोहों ने साम्राज्य की एकता पर कुठाराघात किया।

उत्तराधिकार के युद्ध – मुगल साम्राज्य के पतन में राजसत्ता के लिए होने वाले उत्तराधिकार के युद्धों ने गहरी चोट पहुंचाई। मुस्लिम राजसत्ता में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम नहीं था। राजसिंहासन के लिए अनेक दावेदार होने की स्थिति में तलवार के बल पर उत्तराधिकार निश्चित होता था। जहाँगीर के पुत्रों में और शाहजहाँ के पुत्रों में सत्ता के लिए हुआ युद्ध साम्राज्य के विध्वंस में सहायक हुआ।

मुगल शासकों का नैतिक पतन – प्रारम्भिक मुगल साम्राज्य के शासक अपने राज्य के प्रति निष्ठावान तथा चरित्रवान थे। किन्तु जहाँगीर के बाद के मुगल शासक विलासी तथा अकर्मण्य होने लगे।

धार्मिक नीति – मुगल शासकों की धार्मिक नीति पक्षपात पर आधारित थी। अधिकतर बादशाह इस्लाम के कट्टर अनुयायी थे। उन्होंने इस्लाम के प्रचार एवं विकास में सहयोग दिया जबकि अन्य धर्मावलम्बियों के धर्मों को नुकसान पहुंचाया जिस के कारण मुगल साम्राज्य को उनका सहयोग नहीं मिल सका।

हिन्दू शक्तियों का उदय – मुगल साम्राज्य के पतन में नव-हिन्दू शक्तियों ने भी भूमिका निभाई। मराठों, जाटो, सिक्खों, राजपूतों आदि ने अपने को पुनः संगठित किया और हिन्दू संस्कृति पर आघात करने वाले मुगल साम्राज्य के विरुद्ध उठ खड़े हुए।

निरन्तर युद्ध, स्वेच्छाचारी शासन, अयोग्य उत्तराधिकारी, धर्म आधारित शासन, सैनिक शक्ति में ह्रास, अमीरों का नैतिक पतन, दलबन्दी आदि कारण मुगल साम्राज्य के पतन में सहायक हुए।

अमीर : तुर्क सरदार।

सूबेदार : सूबे का सर्वोच्च अधिकारी।

लोह और रक्त नीति : तलवार और युद्ध की नीति।

तुलगुमा पद्धति : सैन्य रचना की मुगल पद्धति।

जजिया : गैर मुस्लिमों पर लगाये जाने वाला कर।

मण्डलम् : प्रांत।

वलनाडु : जिला।

गोपुरम : मंदिर का प्रवेशद्वार।

वजीर : मुख्य सेनापति या प्रधानमंत्री।

जौहर : राजपूत स्त्रियों द्वारा अपनी मान-मर्यादा के लिए सामूहिक रूप से किया जाने वाला आत्मदाह।

दीन ए इलाही : अकबर के द्वारा चलाया गया धार्मिक सिद्धांत। दीन-ए-इलाही का अर्थ है एक ईश्वर की उपासना का धर्म।

अष्टप्रधान : शिवाजी की आठ मंत्रियों की एक समिति जो शासन संबंधी कार्यों में मराठा राजा को सलाह देने का कार्य करती थीं।

खालसा : गुरू गोविन्द सिंह ने सिक्ख समाज को संगठित कर उसको एक सैनिक दल का रूप दिया जिसे खालसा कहा जाने लगा जिसका अर्थ है, शुद्ध।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए :

1. महमूद गजनवी कहाँ का शासक था –
   (i) मुल्तान (ii) गजनी
   (iii) बहमनी (iv) ईराक
2. गुलाम वंश का संस्थापक कौन था –
   (i) इल्तुतमिश, (ii) मुहम्मद गौरी
   (ii) कुतुबुद्दीन ऐबक (iv) मुहम्मद तुगलक
3. सन् 1266 ई. में दिल्ली सल्तनत की सत्ता किसने संभाली –
   (i) इल्तुतमिश (ii) रजिया
   (iii) कुतुबुद्दीन ऐबक (iv) बलबन
4. तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी को किसने घायल किया –
   (i) पृथ्वीराज (ii) कृष्णराय
   (iii) गोविन्दराज (iv) दीपकराज
5. हरिहर–बुक्का ने किस नगर की स्थापना की –
   (i) बहमनी साम्राज्य (ii) विजयनगर साम्राज्य
   (iii) दिल्ली सल्तनत (iv) मोहम्मद नगर
6. अफजल खां का वध किसने किया –
   (i) शिवाजी (ii) राजाराम
   (iii) साहू (iv) ताराबाई

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. प्राचीन चोल शासकों का वर्णन ..... में किया गया हैं।
2. परमार वंश का संस्थापक ..... था।
3. महमूद गजनवी ने भारत पर कुल ..... बार आक्रमण किये।
4. बलवन ने शासन संचालन के लिये..... नीति का अनुसरण किया था।

कथन सत्य/असत्य लिखिए–

1. शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था।
2. हल्दीघाटी का युद्ध अकबर और रानी दुर्गावती के बीच हुआ था।
3. जहांगीर के बाद शाहजहां सम्राट बना।
4. हुमायूँ बावर का बड़ा पुत्र था।
5. कृष्णदेव राय ने जांबवती कल्याण ग्रन्थ की रचना की थी।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. महमूद गजनवी ने भारत पर कितने आक्रमण किए ?
2. भारत में मुगल साम्राज्य की नींव किसने डाली थी ?
3. विजयनगर की स्थापना किसने की थी?
4. बहमनी साम्राज्य का संस्थापक कौन था?
5. दीन-ए-इलाही धर्म किसने चलाया था ?
6. गुरू गोविन्दसिंह कौन थे?

लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. इल्तुतमिश कौन था? उसने कठिनाइयों पर कैसे विजय प्राप्त की।
2. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था क्या थी?
3. तुगलक वंश ने दिल्ली सल्तनत पर कैसे सत्ता स्थापित की?
4. शेरशाह की शासन व्यवस्था का भारतीय इतिहास में क्या योगदान है, लिखिए।
5. पृथ्वीराज चौहान का भारतीय इतिहास में क्या योगदान रहा है? लिखिए।
6. महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :

1. मोहम्मद गौरी व महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किस उद्देश्य से किए थे व उन्हें सफलता मिलने के क्या कारण थे? लिखिए।
2. राजा कृष्णदेव राय के शासन व्यवस्था व जनता पर उसके प्रभाव का वर्णन कीजिए।
3. अकबर की राजपूत व धार्मिक नीतियों की विवेचना कीजिए।
4. भारत में मुगल सत्ता का प्रतिरोध करने में किन-किन भारतीय राजाओं एवं शासकों की भूमिका रही, उसका वर्णन कीजिए।
5. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण लिखिए।

टिप्पणी लिखिए :

1. महाराणा प्रताप
2. रानी दुर्गावती
3. छत्रपति शिवाजी

❖❖ ★★ ❖❖